१ नलः

'पुण्यश्लोको नलो राजा पुण्यश्लोको युधिष्ठिरः।
पुण्यश्लोका च वैदेही पुण्यश्लोको जनार्दनः॥'

नैषधचरित महाकाव्य के नायक राजा नल को संस्कृत साहित्य में पुण्य-श्लोक कहा गया है। राजा नल धीरोदात्त प्रकृति के नायक है, और धीरोदात्त नायक के सारे गुण राजा नल में विद्यमान है। नैषध चरित के प्रथम श्लोक में ही श्री हर्ष अपने नायक को स्थापित करते हुए कहा है—

६. 'निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथां,
तथाद्रियन्ते न बुधास्सुधामपि।
नलस्सिताच्छत्रित कीर्तिमण्डलः,
स राशिरासीन्महसां महोज्ज्वलः॥'

राजा नल की कथा सुनकर विद्वान लोग अथवा देवगण अमृत का भी तिरस्कार करते है। अन्य भी सभी गुणों से युक्त व सब कलाओं में राजा पारंगत थे, जैसे—

विद्याव्यसनी → राजा नल विद्याव्यसनी तो थे ही अतः वे सभी विद्याओं में पारंगत थे और उन्होंने विद्या के सभी पक्षों का स्वत्व में आधान किया था—

"अधीतिबोधाचरणप्रचारणैर्दशाश्चतस्रः प्रणयन्नुपाधिभिः।
चतुर्दशत्वं कृतवान् कुतः स्वयं न वेद्मि विद्यासु चतुर्दशस्स्वयम्।

और भी

अमुष्य विद्या रसनाग्रनर्तकी — ।

अजेय सैन्ययुक्त → राजानल के पास ऐसी सेना है, जिसे कभी कोई नहीं जीत सका क्योंकि →

" यदस्य यात्रासु बलोद्धतं रजः स्फुरत्प्रतापानलधूमभञ्जिमम्।
तदेव गत्वा पतितं सुधाम्बुधौ दधाति पङ्कीभवदङ्कतां विधौ॥

Scanned with CamScanner

(2)

अप्रतिम योद्धा → नल एक महान योद्धा है, वह युद्ध कलाओं में अश्वारोहण आदि में अद्वितीय है राजा नल की वीरता को वर्णन श्रीहर्ष ने ~~की वीरता का वर्णन~~ चार श्लोको में किया है →

① स्फुरद्धनुर्निस्वनतद्धनाशुगप्रगल्भवृष्टि —— ।
② अनल्पदग्धारिपुरानलोज्ज्वलैः —— ।
③ निवारितास्तेन महीतलेऽखिले निरीति भावं —— ।
④ सितांशुवर्णैर्वयति स्म तद्गुणैर्महासिवेम्नस्सह —— ।

यशशाली → अपने महान गुणों के कारण नल का यश चतुर्दिक् दिशाओं में फैला हुआ था। राजा नल के यश की समानता में सूर्य और चन्द्र कहीं भी नहीं थे —
तदोजसस्तद्यशसः स्थिताविमौ वृथेति चित्ते कुरुते यदा-यदा।
तनोति भानोः परिवेष कैतवात् तदा विधिः कुण्डलनां विधोरपि ॥

) अतिशय दानशील → राजा नल अतिशय दानशील थे, क्योंकि राजा नल ने अपने राज्य में किसी को भी दरिद्र नहीं रहने दिया —
"अयं दरिद्रो भवितेति वैधसीं लिपिं —— ।

राजा नल को अपने जीवन में यही दुःख था कि उन्होंने सुमेरु को टुकड़े-२ करके याचकों को समर्पित नहीं किया —
"विभज्य मेरुर्न यदर्थिसात्कृतो न सिन्धुरुत्सर्गजलव्ययैर्मरुः।
अमानि तत्तेन निजायशोयुगं द्विफालबद्धाश्चिकुराः शिरःस्थितम् ॥"

गुणग्राही → राजा नल गुणग्राही थे, वे विद्वानों का कवियों का बहुत सम्मान करते थे तथा राजा नल सदैव ही विद्वानों का ~~सम्मान कि~~ संग किया करते थे —
"अजस्रमभ्यासमुपेयुषा समं मुदैव देवः कविना बुधेन च।
दधौ पटीयान् समयं नयन्नयं दिनेश्वरश्रीरुदयं दिने-दिने ॥

Scanned with CamScanner

नवांग सुन्दर → श्रीहर्ष ने अपने नायक नल की सुन्दरता का नख-शिख वर्णन किया है। श्री हर्ष नल के सौन्दर्य को प्रस्थापित करने के लिए उपमानों को भी नीचा ही कर देते हैं— (25)

यथा → "अधारि पद्मेषु तदङ्घ्रिणा घृणा क्व तच्छयच्छायलवोऽपि पल्लवे।
तदास्यदास्येऽपि गतोऽधिकारितां न शारदः पार्विकशर्वरीश्वरः॥"

राजा नल के स्मितमुख की उपमा पृथिवी क्या, तीनों लोक में चराचर में भी नहीं है—

"सरोरुहं तस्य दृशैव निर्जितं जिताः स्मितेनैव विधोरपि श्रियः।
कुतः परं भव्यमहो महीयसी तदाननस्योपमितौ दरिद्रता॥"

(9) लोभनीय चरित्र युक्त → राजा नल का चरित्र बहुत उत्तम था अतः सभी स्त्रियाँ नल को अपने पतिरूप में कल्पित किया करती थी—

"न का निशि स्वप्नगतं ददर्श तं जगाद गोत्रस्खलिते च का न तम्।
तदात्मताध्यातधवा रते च का चकार वा न स्वमनोभवोद्भवम्॥"

(10) मानशील → स्वाभिमानी →

राजा नल दमयन्ती में अत्यधिक आसक्त होने पर भी भीम से भैमी की याचना नहीं करते। क्योंकि याचना करने मे कहीं न कहीं उनके स्वाभिमान को ठेस पहुँचती है—

"स्मरोपतप्तोऽपि भृशं स प्रभुर्विदर्भराजं तनयामयाचत।
त्यजन्त्यसूञ्शर्म च मानिनो वरं त्यजन्ति न त्वेकमयाचितव्रतम्॥"

(11) परमकारुणिक नल → राजा नल में सभी मानवीय संवेदनाएं कूट-कूट कर भरी हैं। हंस जब अपने संबंधियों को याद करता हुआ व विधाता को उलाहना देता हुआ विलाप करता है तो राजा नल की आँखों से अश्रुपात होने लगता है—

"सुताः कमाहूय चिराय चुङ्कृतैर्विधाय कम्प्राणि मुखानि कं प्रति?।
कथासु शिष्यध्वमिति प्रमील्य सः सुतस्य सेकाद् बुबुधे नृपाश्रुणः॥"

Scanned with CamScanner